AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

आदिवासी जीवन की सामाजिक स्थिति की वास्तविक सोच और समस्याओं पर अध्ययन

गोरे लाल मीणा,
रिसर्च स्कॉलर,
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर
डॉ. ज्योति शर्मा
प्रोफेसर एंड गाइड
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जयपुर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPERSUBMITTED BY MEFORPUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILLNOT Be LEGALLYRESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITHNO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANYPUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE,I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THISPAPER/ARTICLE

सार

इक्कीसवीं सदी में साहित्य और समाज में जनजातीय बातचीत और विचार ने लोकप्रियता हासिल की है। उन्हें हमेशा नीचा दर्जा दिया गया है क्योंकि आदिवासी समाजों को अतीत के रूप में देखा जाता है। हालाँकि, हाल ही में शोषणकारी नीतियों के खिलाफ साहित्यिक, सामाजिक और शैक्षिक आंदोलनों को बढ़ावा देने के परिणामस्वरूप आदिवासी समाज में भी जागरूकता फैली है। जनजातीय और गैर-आदिवासी दोनों तरह के अनेक लेखकों ने जनजातीय साहित्य की रचनाओं का निर्माण किया है, जिसने लोगों के जनजातीय लोगों को देखने के तरीके को बदल दिया है। सभी साहित्यिक विधाओं में आदिवासी जीवन, रहन-सहन, परम्पराओं और सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्थाओं पर लेखन हो रहा है। मुख्य सभ्यता द्वारा उन्हें जंगली, जंगली, अज्ञानी, भोला आदि के रूप में लेबल करने के परिणामस्वरूप जनजातियाँ अपने स्वयं के अस्तित्व के बारे में हीन भावना विकसित कर

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN2320-3714
Volume 2 Issue3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

लेती हैं।

कीवर्ड- आदिवासी जीवनए, सामाजिक स्थिति, वास्तविक सोच

प्रस्तावना

भारत एक विशाल राष्ट्र हैं। जहाँ अनेक समुदाय निवास करते हैं। भारत की सामाजिक संस्कृति में आदिवासी समाज का अपना अस्तित्व है। सामान्यतः आदिवासी शब्द से तात्पर्य है- 'यहाँ के मूल निवासी'। आदिवासी का शाब्दिक अर्थ है आदिम युग में रहनेवाली जातियाँ। मूलतः ये वे जातियाँ हैं जो 5000 वर्ष पुरानी तथा आदि सभ्यता को संभाले हुए है। कभी आदिवासियों की स्वतंत्र थी। उनका जल, जंगल और जमीन के संसाधनों पर अधिकार था। परंतु जैसे-जैसे साम्राज्यवादी शाक्तियाँ पनपती गई वैसे-वैसे उनके संसाधनों पर आक्रमण होने लगा। उनका शोषण होने लगा। इसलिए आज आदिवासी विमर्श अस्तित्व का विमर्श है।

किसी एक विशिष्ट भूप्रदेश में निवास करनेवाले, समान बोली का प्रयोग करनेवाले निरक्षर समूह को आदिवासी कहा जाता है। आदिवासियों को जनजाति, वनवासी, गिरिजन आदि नामों से अभिहित किया जाता हैं। भारतीय संविधान में इन्हें अनुसूचित जनजाति माना है। इस आदिवासियों के संदर्भ में लिखे गए साहित्य के संबंध में डॉ विनायक तुकाराम का अभिमत है कि-'आदिवासी साहित्य वन संस्कृति से संबंधित साहित्य है। आदिवासी साहित्य उन वन जंगलों में रहनेवाले वंचितों का साहित्य हैं जिनके प्रश्नों का अतीत में कभी उत्तर ही नहीं दिया गया।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

यह ऐसे दुर्लक्षितों का साहित्य है जिनके आक्रोश पर मुख्य धारा की समाज व्यवस्था ने कभी ध्यान ही नहीं दिया। यह गिरी कंदराओं में रहनेवाले आदिवासियों का साहित्य है। सदियों से जारी क्रूर और कठोर न्यायव्यवस्था ने जिनकी सैकड़ों पीढ़ियों को आजीवन वनवास दिया। उस आदिम समूह की मुक्ति का साहित्य है।'

इस समाज में मुखिया वही होता है जिसकी कोई औलाद नहीं होती। वह सबका हितू और सबका मताई-बाप है। वही किसी एक की औलाद को बनाता है गुनिया अर्थात अगला मुखिया। फुलिया जब मुखिया माई बनी तो उस पर यह बंधन आ गया कि वह किसी पुरुष से यौन संबंध न रखे। फुलिया मानती है कि उसके पति गुनिया पर किसी प्रकार का बंधन नहीं है। वह चाहे तो दूसरी औरत कर सकता है। विवाह न भी करें किसी स्त्री के चाहने पर उसको सुख दे सकता है, पूत दे सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि इस समाज में यौन संबंधों की पुरुषों पर कोई पाबंदी नहीं है।

आदिवासी समाज की समस्या नर्मदा परियोजना के कारण विस्थापन की है। जैसा कि वीरेन्द्र जैन ने लिखा है-"अब ये शहर वाले नदी बाँध रहे हैं। तब प्रलय आएगी। जो अब तक बचा है वह सब भी स्वाहा हो जाएगा। तब हम कहाँ जाएगे? कैसे जिएगे?" आदिवासी समाज में विवाह करना और पत्नी को छोड़ देना मामूली बात है। जब फुलिया मुखिया माई बन गई तब फुलिया के आग्रह पर उसके पति गुनिया ने मुइया से विवाह किया। गुनिया को यकीन होन लगा था कि अब जीरोन खेरा नहीं बचेगा, बांध के कारण टूट जायेगा। आदिवासी समाज बिखर जायेगा। न मुखिया के चाहने पर न गुनिया के चाहने पर इसे बचाया जा सकता है।

'जंगल जहाँ शुरु होता है' में आदिवासी समाज के शोषण का विवेचन किया गया है। डाकू आदिवासी

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

थारू समाज का शोषण करने लगी। उन्होंने थारूओं से कहा कि वे उनका साथ दे। जिसके बदले में वे ठेकेदारों, जमींदारों से आदिवासियों को जमीन दिलवा देंगे। परंतु वास्तविकता यह है कि एक भी डाकू किसी जमींदार के खिलाफ नहीं बोला। बल्कि थारुओं और धांगड़ो का शोषण करने लगा।

कुमार और मास्टर साहब में थारू शब्द को लेकर बहस होती है। थारू शब्द ठाकुर से घिसकर बना है या स्थिर ॉाब्द से। मास्टर साहब का मत है कि थारू मुख्यतः वाक्य है- "ये वाक्य हैं। स्थिर स्वभाव, शांत, गंभीर विष्वासी, धैर्यवान, यहॉ की जनसंख्या के एक लाख पचास हजार, यू. पी. के एक लाख तीस हजार, कुछ नेपाल के-कुल मिलाकर तीन लाख थारू कोई नहीं गौतम बुध्द के वंशज हैं।"

इस उपन्यास में थारू आदिवासी समाज का जीवन संघर्ष और डाकू समस्या व्यक्त हुई है। आदिवासी समाज के प्रमुख पात्र बिसराम, जोगी, श्यामदेव, मलारी आदि पुलिस, डाकू, जमींदार, ठेकेदार आदि से भयभीत और आतंकित है। पुलिस उन्हें डाकुओं का 'पैरासाइट' मानती है तो डाकू पुलिस के खबरी मानते है। बिसराम बेटी की मौत पर यही कहता है कि-'हमारा तो हर तरीका से नौबत लिखल बा, बेटे जमींदार से, डाकू से, देवता पिता से, भूत भवानी से, पुलिस लेखपाल से...अरे कवन सुख देखल ऐ बेटो-ई-ई-ई।'

थारू आदिवासियों का क्षेत्र मिनी चंबल इसलिए कहा जाता है कि यहाँ डाकुओं का वर्चस्व है। आदिवासी काली डाकू बनने पर विवश हो जाता है। उसीके शब्दों में-'हमने नहीं चुनी थी यह जिनदगी। नहीं बने थे हम इन राहों के लिए, फिर देखो कैसे धकेल दिये गए।'

परिवार समाज का एक अंग है। परिवार में ही व्यक्ति को संस्कार प्राप्त होते है जो उसे समाज में

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

रहने के लिए आवश्यक हैं। भारतीय समाज की प्रमुख विशेषता पारिवारिक व्यवस्था है। यह व्यवस्था आदिम समाज में भी देखी जाती है। 'पठार पर कोहरा' उपन्यास की रंगेनी को अपने पति की याद आती है। यदि वह होता तो उनके बेटे सोनारा को तीर बनाना, धनुष्य की डोरी तानना, खटियाँ बुनना, रस्सी बांटना, शिकार की टोह लगाना ऐसी हजार बातें सीखाता। जैसा कि आदिवासियों के बच्चों को उनके पिता सीखाते है। सोनारा के पिता की याद आते ही रंगेनी की छाती धड़कने लगती है, ऑखों की पुतलिया पसीजने लगती है। उसने अपने बेटे सोनारा को मॉ बाप बनकर पाला है। इस प्रकार रंगेनी सोनारा को संस्कारित करती है।

आदिवासी यद्यपि आर्थिक गुजारा करने के लिए कोई भी व्यवसाय करते है। जिनमें ताड़ी बेचना एक प्रमुख उद्योग है। परंतु रंगेनी नहीं चाहती कि उसका बेटा यह व्यवसाय करें। वह सोनारा को समझाती है कि-"कौनो जरुरत नहीं निसा-पानी बेचने की। कलाल कहीं का! ताऽऽड़ी बेचेगा,...दुर्र रे! ऐसे रुपया जमा करेगा? धुत्त! कौनो भूखे मर रहे हैं का रे हम?'

समाज -

आदिवासी केन्द्रित उपन्यासों में आदिवासी समाज का सर्वांगीण चित्रण किया गया हैं-

मनमोहन पाठक के 'गगन घटा घहरानी' में आदिवासी समाज का सर्वांगीण चित्रण हुआ है। इसमें उराव आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक परिवेश की प्रस्तुति हुई है। इस उपन्यास में आदिवासियों के सामाजिक पक्ष को उभारते हुए वीरेंद्र यादव ने लिखा है-"झारखंड के पलामू क्षेत्र का आदिवासी जीवन व संघर्ष इस उपन्यास में अपनी संपूर्णता के साथ उपस्थित है। ओराव जनजाति की इस संघर्ष गाथा में आदिवासी जीवन का सौंदर्य, शौर्य, विवशता, कुरूपता,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

अभाव या बदलाव की चेतना एक साथ उपस्थित है। यह समूचे प्रांतर तथा आदिवासी समाज के व्यक्तित्वान्तरण की औपन्यासिक गाथा है।" जमींदार रायसाहब के द्वारा उराव समाज का शोषण किया जाता है। इसका प्रमाण इस प्रसंग में मिलता है। जब उनका आदिवासी सेवक वृद्ध हो जाता है तो वह किसी काम का नहीं रहता। तब रायसाहब उसके हाथ-पैर बांधकर भूखे चीते के सामने फिकवा देते है। आदिवासी समाज हमेषा अन्याय को सहता रहा है। उपन्यास में यह प्रतिपादित किया है। कि अब आदिवासी जाग्रत हो रहे है। आकाश में घटाए घहरा रही है। वे अपने शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते है। इसका कारण समसामायिक युग में आ रही सामाजिक चेतना है। 'गगन घटा घहरानी' उपन्यास का शीर्षक ही यह सिद्ध करता है कि आदिवासियों की एकता और सामूहिक षक्ति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार है।

'जहाँ बास फूलते हैं' उपन्यास में लुशेईयों का चित्रण हुआ है। दोला और नानी में प्रेमसंबंध है। दोला रालते कौम का है इसलिए लुशेई कानून उस पर लागू नहीं होता है। तब पंचायत का बुजुर्ग यही कहता है-"जुर्म लुशेईयों के बीच करेगा, लुशेईयों के साथ करेगा और आइन बधारेगा राल्ते का? अरे दस कोड़े के साथ इसे बीस जूता भी मारना चाहिए और जूते का पैसा भी लेना चाहिए।"

माइकेल ने देखा कि श्रीनगर से जम्मू और रामेश्वरम् के इस सड़क पर अवैध बच्चों की लाशें हैं। हर षहर में वेष्याओं की जमात है। बलात्कार और अपहरण के मुद्दे है। परंतु मिजो में ऐसा नहीं है। कामी कहती है कि-'यहा बरगद के पास युवती, जिस युवक का नाम लेती है। उससे शादी हो जाती है।'

मिजो समाज हमेशा स्वतंत्र रहा है। जब से लुशेईयों के बेटों ने इस धरती पर पाँव रखे तब से वे अपनी कौम पर शासन चलाते रहे। पहले इन जंगलों में पशु-पक्षी रहते थे। नदी के जल

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

में मछलियां और घोंघे मिलते थे। जब अंग्रेज आये तो इनसे इनके पूर्वजों ने संघर्ष किया। जब पादरी आया तो उसका उपदेश सुना। यहा के आदिवासी समाज का सदैव शोषण होता रहा है। जब फसल कटकर आती है तो जंगल सरकार के दावे टैक्स लेने आ जाते है। पूरे गांव की तलाशी ली जाती है। उन पर जुल्म ढाया जाता है। एक घटना उपन्यास में चित्रित है। कोई चालीस जवानों की टोली हैवानियत पर उतर आई। कुल सिपाहियों ने गाँवों से घरों के चसरे काट डाले। बरतनों को पीट-पीटकर तोड़ दिया। अनाज के भंड़ारों में मलमूत्र किया। इन्हें देखकर स्त्रियाँ एक घर से दूसरे घर भागने लगी। जो पकड़ में आ गई उन्हें अपनी स्तनों और गुप्तांगों पर बूटों की मार सहनी पड़ी। मर्दो ने संगठित होकर उसका विरोध करना चाहा तो उस पर अंधाधुंद फायरिंग किया गया।

जब गाव में मुख्यमंत्री आने के इश्तहार छपे तो उन पर महरुम चैधरी अमीन की तस्वीर भी छपी हुई थी। जिसमें चैधरी साहब के मेवो जाति के लिए किये गये योगदान को भी छापा गया था-"उदाहरण के लिए चैधरी साहब ने भारत-पाक विभाजन के समय किस तरह मेवात के अल्पसंख्यकों यानी हिंदुओं की एक बत्तख की तरह अपने बच्चों को पंखों के नीचे छिपा कर उनकी हिफाजत की।" मेव आदिवासी अत्यंत भोले-भाले है। इसलिए मनीराम कहता है कि-'यही मेरी सुरी मेव की जात इतनी भोली, और बावली है कि चाहे जैसे चाहो चूतिया बना लेओ...।' वास्तव में 'मेव' शब्द का असली मतलब है 'पहाड़ी' जो इस कौम के मूल और मेवात की विशेषताओं की और इशारा करते है।

नारी समाज

समाज में नारी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। सभ्य समाज की प्रतिवेदिया नारी केन्द्रित

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

होती है। परंतु इसी नारी पर भयंकर रुप से अन्याय, अत्याचार होता है। आदिवासी महिला के शोषण को रेखांकित करते हुए डा. माया प्रसाद का अभिमत हैं कि-"एक बड़ी संख्या ऐसे आदिवासी महिलाओं की हैं जिनकी जीविका वनोपज पर है। जंगलों से लकड़िया काटकर, तेंदू के पत्ते तथा जड़ी बूटी बीनकर उनका व्यवसाय करने वाले इन स्त्रियों की स्थिति और भी भयावह है। वे केवल आर्थिक बदहाली का ही शिकार नहीं हैं, अपितु शोषण के उस जाल में फँसी हुई हैं जिनका एक सिरा जंगलात के अधिकारियों-कर्मचारियों के हाथ में है तो दूसरा बिचैलिए-व्यापारियों के मुठ्ठी में। अपने परिवार के लिए दो जून भात जुटाने की कोशिश में लगी इन श्रमजीवी स्त्रियों के आर्थिक, देहिक शोषण का सिलसिला सुरक्षा के तमाम सरकारी आश्वासनों के बावजूद आज भी जारी है।"

वीरेन्द्र जैन के 'पार' उपन्यास में जीरोन खेरा की स्त्रियों पर होने वालेे अत्याचार का वर्णन है। आदिवासियों के इलाके में डाकू धमाचैकड़ी मचाते है और एक-दो स्त्रियों केा उठाकर ले जाती है। बेचारे आदिवासी उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। पहले तो एक महीने में स्त्रियाँ लौट आती थी। परंतु बाद में उनका लौटना बंद हो गया। वे डाकू के साथ रहने लगी। इस आदिवासी समाज में यौन संबंधों पर कोई पाबंदी नहीं है। उपन्यासकार के शब्दों में-"कहने को भले ही यहा कोई किसी की जनी है, कोई किसी की, लेकिन हकीकत में तो सब-सबकी जनीं हैं। जितना जो जिसका है, उतना ही उसका भी है जिसका कोई दूसरा है।"

इस समाज में नारी स्वतंत्र है। यदि औरत अपने पति को छोड़कर दूसरे के साथ रहना चाहती है तो उस पर कोई पाबंदी नहीं है। कचहरी में नोटरी के समक्ष वह प्रतिज्ञा पत्र दे सकती है कि वह पति को छोड़कर इस दूसरे व्यक्ति के साथ घर बसाने जा रही हैं इसी कारण कई बार उसका

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

शोषण भी होता है। उपन्यासकार के शब्दों में-"इस इलाके में ऐसे ढेरों जमींदार, रईस, ताल्लुकेदार, असरदार अफसर और अन्य बड़े कारोबारी लोग हैं जो औरतें खरीदते हैं। उनके आदमी गांव-देहात से, खेर-टपरे से औरतें उठा कर, फुसलाकर, हाककर लाते हैं। औरत को कचहरी में किसी एक आदमी के साथ पेश किया जाता है। उस औरत की और से कहलवाया जाता है कि वह इस आदमी के साथ अपना घर बसाना चाहती है। अपनी मर्जी से। किसी की जोर-जबरदस्ती से नहीं।" निर्मल साव जैसे कई साव है जो औरतों को खरीदकर अफसर, पुलिस और डाकू के सुपुर्द करते है। लड़किया भी खरीदी-बेची जाती हैं। उनका लेन-देन चुपचाप होता है। उन्हें जोर जबरदस्ती और पतुरिया के लक्षण सिखाये जाते हैं और बाजार में बसाया जाता है।

नारी स्वतंत्रता के कारण इस समाज की नारियाँ स्वच्छंद हो गई है। अपने आर्थिक संकट से उबरने के लिए वे साव के साथ हँसी-मजाक करती है और अपने टपरा में ले जाकर लाड़ मनुहार करती है। साव आदिवासियों को धमकाता रहता है कि पांच पीढ़ी पहले हमारे पुरखों ने जीरों की खेती कर जीरो गाँव बसाया था। इसका हमारे पास सबूत है-"सो मोंगे-मोंगे, सीधे-सीधे वह जगह खाली कर दो। तुमने खेरा न छोड़ा तो हम लाठी-बल्लम लाएगे, पुलिस-पलटन लाएँगे, सिपाही-दरोगा लाएँगे। तब जान-माल का जो टोटा होगा उसकी जबाबदेही तुमरी होगी।"

'जहाँ बाँस फूलते हैं' उपन्यास में आदिवासी नारी के स्वच्छंद व्यवहार को चित्रित किया गया है। काली का प्रेमी झा है। जब झा ने काली को अपने आलिंगन में लिया तो वह मर्दगंध से आक्रांत हो गई। झा सोचने लगा कि-"कोई चौबीस साल की लड़की भला कैसे एकदम कंवारी हो सकती है, वह भी नुमाइशों के बेराक-टोक समाज में। फिर दोनों सोचते रहे कि जब औरत और मर्द का संबंध इतना स्वाभाविक होता है तब इस पर इतना पहरा क्यों होता है? और फिर इस सुख का अंत क्या

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

होता है?"

जेरमी वाई के साथ वाइरमा जाना सोचती है क्योंकि वहा स्त्रियों का जीवन सुखपूर्ण है। वे परदे में रहती है। सिर्फ घर का काम करती है। पुरुष उसको पालता है। तो यहा सुबह उठकर स्त्री को मीलो नीचे तुईपुर से पानी लाना पड़ता है। सुअर को चारा देना पड़ता है, दिनभर खेत में काम करना पड़ता है, लकड़ी के गठ्ठर ढोने पड़ते है, कपड़े धुलाने पड़ते है, अन्न उपजाना पड़ता है, भात बनाना पड़ता है और निठल्ला पति केवल दारु पीता है, मौज करता है और हर साल एक बच्चा पेट में भर देता है। कामी वाइरमा क्षेत्र में नारी के सुखद स्थिति के संबंध में अपनी सहेलियों से कहती है-"वहाँ बड़ा मजा है रे। वहा की लड़किया बड़ी इज्जत से रहती है। मर्द पानी भरता है। अन्न जुटाता है, घर बनाता है। और औरत रानी की तरह रहती है। सिर्फ दो-तीन साल में एक बच्चा पैदा करती है। खाना बनाती है। कढ़ाई-बुनाई करती है।"

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में नारी विषयक दृष्टि दृष्टिगत होती है। आदिवासी कबूतरा समाज की स्त्रिया साहसी होती हैं। वे पुरुषों के समान हथियार चलाने में सिद्धहस्त होती है। साहस के बल पर कदमबाई, भूरी और अल्मा जैसी नारिया जीवन में निराष न होकर संघर्ष करती हैं। चोरी और शराब का व्यवसाय होने के कारण कबूतरा समाज के मर्दो को अकसर पुलिस पकड़कर ले जाती है और इसकी सजा स्त्रियों को भुगतनी पड़ती है। कदमबाई अपने समाज के मुखिया सरमन को स्पष्ट शब्दों में कहती है कि-"सदा मारे जाने की चिंता सताती रहती है। कभी लड़ने की बात भी ता सोचो। पुलिस आई, सरक गए जंगल में। ठेकेदार आए, भाग गए खेतों में। औरतें पिटती रहीं। तुम हाहाकार सुनकर भी जान बचाए सिमटे रहे।"

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

महिलाएँ इस समाज में जनानी नहीं सियानी कहलाती है। जनानी शब्द कहीं न कहीं केवल जनन, जन्म देने की प्रक्रिया तक उन्हें संकुचित करता है। जबकि सयानी शब्द उनकी विशेष समझदारी, सयानेपन की और संकेत करता है।

असुर आदिवासी स्त्रियाँ देहिक रूप से शोषित होती रही। कसाईयों के हाथों में पड़ी बेटियाँ बार-बार गर्भ गिराने के कारण असमय वृद्धा हो जाती थी।

आदिवासी केन्द्रित उपन्यासों में लगभग सभी उपन्यासकारों ने आदिवासी परिवार में व्याप्त अज्ञान का, निरक्षरता, अंधविश्वास, पिछड़ापन, कुप्रथाओं का सोदाहरण विवेचन किया है।

ये उपन्यासकार आदिवासियों के प्रति संवेदनशील है, प्रतिबद्ध है और उनकी यही प्रतिबद्धता उनके आदिवासियों के संदर्भ में व्यक्त सामाजिकता से स्पष्ट होती है। आदिवासी समाज में सबसे दुखी है आदिवासी नारी। आदिवासी स्त्रियाँ अथक परिश्रम करती हैं। वे ही परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए समर्पित है। इसके लिए भले ही उन्हें विवश होकर देह व्यापार करना पड़े।

निष्कर्ष

जनजातीय समाज आदिवासी समाज हैं जो अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये समाज पारंपरिक संस्कृति और जीवन शैली को बनाए रखने और संरक्षित करने में महत्वपूर्ण रहे हैं। आज उसे इस सभ्यता और संस्कृति की मान्यता के लिए सरकार और मुख्यधारा से लड़ना होगा। परिणामस्वरूप जनजातीय संवाद की आवश्यकता और साहित्य के क्षेत्र में जनजातीय लेखन नामक एक नई विधा का उदय हुआ। अगर आदिवासी वर्गए जीवित परंपरा

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

और सभ्यता को आगे बढ़ना है तो उन्हें उन हानिकारक मान्यताओं और सुस्ती से मुक्त करना महत्वपूर्ण है जो उनके बीच व्याप्त हो गई हैं। उन्हें अपने अधिकारों के साथ-साथ समकालीन संस्कृति और सभ्यता के बारे में भी जागरूक किया जाना चाहिए।

संदर्भ

- आदिवासी अस्मिता की पड़ताल करते साक्षात्कार- सं. रमणिका गुप्ता स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012
- आदिवासी केन्द्रित हिन्दी साहित्य- डा. उषा राणावत, डॉ. सतीश पाण्डेय, डॉ. शी तला प्रसाद दुबे अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2012
- आदिवासी भाषा और शिक्षा-सं. रमणिका गुप्ता, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012
- आदिवासी विमर्शः स्वस्थ जनतांत्रिक मूल्यों की तलाश- डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, डॉ.. रावेन्द्र कुमार साहू पैसिफिक पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम डॉ. संस्करण 2012
- आदिवासी विकास से विस्थापन- डॉ.. रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008
- आदिवासी समाज और शिक्षा-रामशरण जोशी, ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996
- आदिवासी साहित्य विविध आयाम- सं. रमेश संभाजी कुरे, डॉ. मालती शिंदे, प्राचार्य प्रवीण शिंदे, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2013
- आदिवासी स्वर और नई शताब्दी- सं रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,

ISSN2320-3714
Volume 2 Issue 3
June 2022
Impact Factor: 10.2
Subject Hindi

द्वितीय संस्करण 2008

- आदिवासी शोर्य और विद्रोह- सं. रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012
- प्रसाद, स. (2022). आदिवासी जनजातियों की सामाजिक स्थिति: समस्याएँ और समाधान. सुरभि प्रकाशन.

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification/Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright /Patent/Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

गोरे लाल मीणा
डॉ. ज्योति शर्मा